अरहंत

गृहस्थ जीवन त्याग कर मुनि धर्म अंगीकार कर निज आत्मा का ध्यान कर चिंतन करते हुए चार घातिया कर्म-ज्ञानवर्णी, दर्शनावर्णी, मोहनयी व अंतराय को नष्ट कर अपने अनन्त चतुष्टय-अनन्त ज्ञान अनन्त दर्शन, अनन्त सुख व अनन्त वीर्य को प्रकट करते हैं, जिनको केवल ज्ञान प्राप्त होता है वे अरहंत परमेष्ठी कहलाते हैं उनके निम्न गुण होते हैं।

"चौबीसों अतिशय सहित प्रतिहार्य पुनि आठ
अनन्त चतुष्ठय गुण सहित, छीयालीसों पाठ"

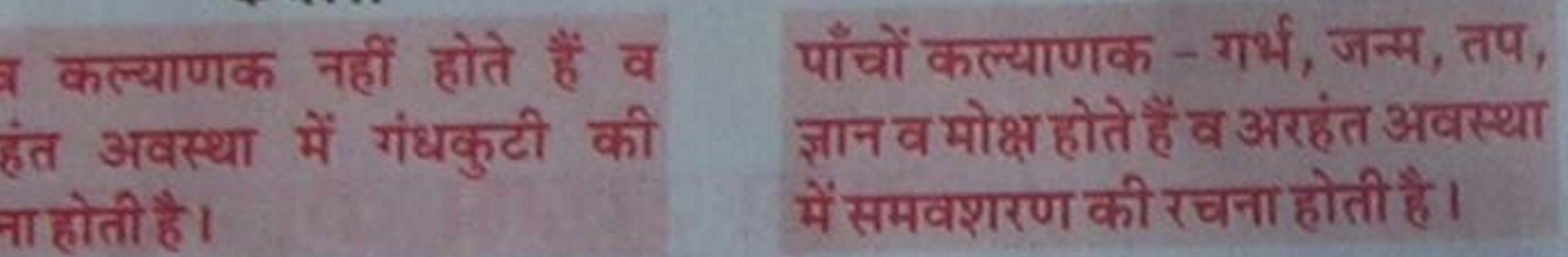

तीर्थंकर प्रकृति-बंध जीव के प्रायः गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याणक होते हैं। उनके द्वारा तीर्थ की स्थापना होती है। धर्म चक्र का प्रवचन होता है। समवशरण सभा का आयोजन होता है। फलस्वरूप जीव का कल्याणक मार्ग प्रशस्त होता जाता है। यहाँ भव्य जीवों को सम्यक उपदेश और दिशा-दर्शन सहज में उपलब्ध रहता है। चैत्य या मन्दिर इन्हीं का रूप है।

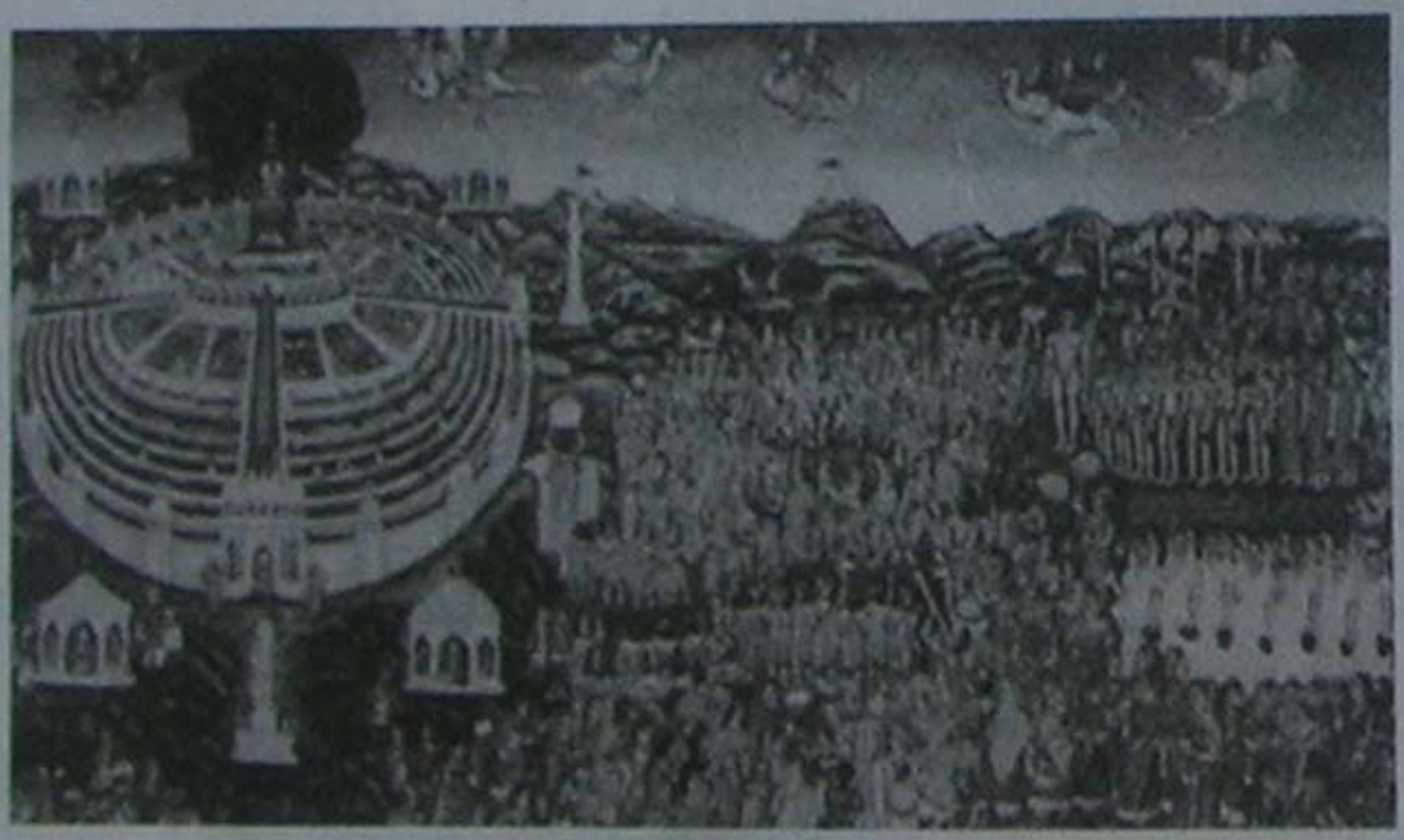

समवशरण सभा